अन्य जीव भी भविष्य की चिंता करते हैं

मीरकाट प्रकार के जानवर जो टेयरस कहलाते हैं ऐसे अधपके फलों को पहले ही चुन लेते हैं जिनको वे भविष्य में पकने के बाद खाना चाहते हैं। टेयरस, मध्य और दक्षिण अमेरिका में पाए जाने वाले जानवर हैं जो पेड़ों पर रहते हैं और इनकी लम्बी पूंछ होती है।

अगर यह साबित हो जाता है कि ये जानवर इस तरह से फलों के पकने की प्रतीक्षा करते हैं तो यह कमाल की बात होगी कि मनुष्यों से इतर जीव भी अपने भविष्य के बारे में विचार करते हैं। मैक्वाइरी विश्वविद्यालय, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया के फर्नेन्डो सोले और ट्रॉपिकल स्टडीज़ संस्थान, कोस्टा रिका के इसाइस अल्वरैडो-डियाज़ ने ला सेल्वा, कोस्टा रिका के जंगल और फालतू पड़े बागान में लगे केले के 36 पेड़ों का निरीक्षण किया। उन्होंने फलों की परिपक्वता के आधार पर उन्हें वर्गीकृत किया; वर्ग 1 से 4 में हरे, मंडदार और न खाए जा सकने वाले फलों को रखा गया जबकि वर्ग 5 में पके हुए फल। वर्ग 4 के 22 फलों के अंदर रेडियो ट्रांसमीटर लगाए गए। इन्हें यदि पेड़ से तोड़ लिया जाए, तो ये पकने के लिए तैयार थे।

सभी पके हुए फल तो खा ही लिए गए पर टेयरस अपने साथ वर्ग 4 के 52 केले भी ले गए। सोले ने देखा कि दो टेयरस बिना पके फलों को एक पेड़ की खोह में छुपा रहे हैं। कुछ दिनों के बाद ही उन्होंने देखा कि टेयरस सीधे उस पेड़ पर गए और फलों को निकालकर खा भी लिया।

सोले इस बात के प्रति पूरी तरह आश्वस्त नहीं थे कि ये वही जानवर हैं जिन्होंने फल छिपाए थे। ये दूसरे टेयरस भी हो सकते थे मगर यदि ये दूसरे जानवर होते तो पहले उन्हें सूंघ-सूंघकर फलों को ढूंढना पड़ता। ऐसा नहीं था।

खाए गए पके हुए फल के छिलकों के साथ ही उन पर लगाए गए तीन रेडियो ट्रांसमीटर भी पेड़ों की खोह या घास में से बरामद किए गए। सोले का कहना है कि बिना पके फलों को छुपा देने से वे किसी अन्य जीव द्वारा खाए जाने से बच जाते हैं। वर्ग 4 ही फलों का ऐसा वर्ग है जो तोड़ लेने के बाद पकने वाले हैं। मोनास विश्वविद्यालय, मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया के प्राकृतिक व्यवहारवादी एन्ने पीटर्स के अनुसार टेयरस ये फल भविष्य के लिए जमा करते हैं। उनके अनुसार हालांकि ये प्रेक्षण सीमित ही हैं किन्तु व्यवहार का क्रम इतना विशिष्ट और स्पष्ट है कि इसके महज़ इत्तेफाक होने की सम्भावना कम ही है। ***(स्रोत फीचर्स)***